प्रतिष्ठा का व्यामोह

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

समाज का हर व्यक्ति प्रतिष्ठा प्रिय होता है। प्रतिष्ठा का अर्थ है सम्मान, मान–मर्यादा की प्राप्ति। प्रतिष्ठा कब मिलती है? जब व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करता है तब समाज में वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। सामाजिक कार्य के साथ अपनी प्रतिष्ठा को जोड़ो तो अच्छा है। मनुष्य के लिए स्वार्थ से अच्छा परार्थ और परार्थ से अच्छा परमार्थ है। आत्मकेन्द्रित होने से मानव को समाज में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जब परोपकार या समाजहित के लिए कार्य किया जाता है तो मनुष्य का मूल्यांकन समाज करता है। प्रतिष्ठा स्वयं नहीं प्राप्त होती। बल्कि प्रतिष्ठा समाज द्वारा दी जाती है। प्रतिष्ठा अच्छी चीज है किन्तु प्रतिष्ठा का व्यामोह बुरी चीज है। प्रतिष्ठा से इज्जत बढ़ती है। प्रतिष्ठा व्यक्ति के कार्य का प्रोत्साहन है। जो समाज और राष्ट्र के लिए अच्छे कार्य करते हैं उन्हें सम्मान देने के लिए भारत सरकार भी भारत के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित करती है। भारत सरकार के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को अनेक पुरस्कार दिये जाते हैं। ये सम्मान व्यक्तियों के कार्यों के आधार पर उनके मूल्यांकन के पश्चात् दिया जाता है। कोई स्वयं यह पुरस्कार नहीं प्राप्त करता, बल्कि यह पुरस्कार प्रोत्साहन के लिए दिया जाता है। भारत में जितने भी भारत रत्न प्राप्त कर्त्ता हैं उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके देश को ऊँचाई पर पहुँचाया है। लोककल्याण के लिए जो कार्य करते हैं उनका मूल्यांकन स्वयं हो जाता है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर में प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं था। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों का उपदेश देकर जनता को सन्मार्ग प्रदान किया। जीवन में अनेक कष्टों को सहकर भी लोककल्याण के लिए कार्य किया। इसी का परिणाम हैं कि आज भी उनके सिद्धान्तों को लोग जीवन में पालन करते हैं।

वर्तमान सन्दर्भ में यदि देखा जाये तो मनुष्य स्वार्थी हो गया है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का नुकसान करने में भी नहीं हिचकता। आज गरीबों और अमीरों के बीच खाई बढ़ती जा रही है। सभी को जीने और सुख प्राप्त करने का अधिकार है। जीने का मतलब यह नहीं

है कि झुग्गी–झोपड़ियों में जीवन–यापन किया जाये। रोटी, कपड़ा, मकान और चिकित्सा जीवन की बुनियादी सुविधाएं है। कम से कम ये वस्तुएं सभी को उपलब्ध हो। किसी भी व्यक्ति को किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े। असामनता दूर होनी चाहिए। सभी लोग समानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। योग्यता के अनुसार सबको कार्य करने का मौका मिलना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं रहेगा। आजकल प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लोग बहुत सा दिखावा करते है। दिखावे से प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्रतिष्ठा अहंकार को जन्म देती है। अहंकारी व्यक्ति दूसरों को तृण के समान समझता है। उसके लिए दूसरों के जीवन का कोई मूल्य नहीं है। हमारे देश में ऐसे अनेक महापुरुष हुये है जिनके पीछे प्रतिष्ठा चलती थी। इस सम्बन्ध में पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। एक उच्च कोटि के साहित्यकार होते हुये भी उन्होंने प्रतिष्ठा को कोई महत्व नहीं दिया। आज जब उनका मूल्यांकन किया जाता हैं तो प्रथम पंक्ति के साहित्यकारों में उनकी गणना होती है। उन्होंने समाज के दबे कूचले वर्ग के लिए आवाज उठाई। समाज में निम्नवर्ग के लोगों को सम्मान दिलाने के लिए उनका साहित्य समर्पित है। ऐसे अनेक महापुरुष हुये है जो समाज के लिए जिये और समाज के लोगों के कंठहार बन गये।

मानव सभी प्राणियों श्रेष्ठ है। दूसरों को सम्मान देने से सम्मान मिलता है। इस भावना से यदि सम्मान की प्राप्ति होती है तो वही वास्तविक सम्मान है। जियो और जीने दो, आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो हमें अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए, की भावना मनुष्य के भीतर होनी चाहिए। आज मनुष्य प्रतिष्ठा के व्यामोह में प्रकृति के साथ भी छेड़छाड़ कर रहा है। अन्धाधुन्ध वृक्षों की कटाई से प्रकृति और मानव के बीच में सन्तुलन बिगड़ रहा है। दिखावें में आकर मनुष्य आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह कर रहा है और समाज में बड़ा आदमी बनने का दिखावा कर रहा है। यह प्रतिष्ठा का व्यामोह है। भारतीय शास्त्रों में प्रतिष्ठा को सूकरी विष्ठा कहा गया है। हमारे ऋषि, महर्षि प्रतिष्ठा से बहुत दूर रहते थे। समाज से पृथक् वनप्रदेशों में निवास करते थे। प्रतिष्ठा का व्यामोह उन्हें नहीं था। सभी प्रकार की सम्प्रदाएं उनकी इच्छामात्र से उपस्थित हो जाती

थी। उनमें आन्तरिक बल था। आत्मा, परमात्मा जैसे विषयों पर चिन्तन करके उन्होंने समाज को एक नयी दिशा दी है। विज्ञान जहां तक पहुँच नहीं पाता वहां से उनका चिन्तन प्रारम्भ होता था। यदि मनुष्य अच्छा कार्य करता है तो प्रतिष्ठा उसे स्वयं प्राप्त होती है। गीता का निष्काम कर्म का सिद्धान्त बहुत ही अच्छा सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का मूलमन्त्र है– कार्य करो, फल और प्रतिष्ठा की इच्छा न करो। मन के अनुसार यदि फल नहीं मिलता तो चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। बार–बार प्रयास करना चाहिए। समाज का ऋण हमारे ऊपर है, उसको सेवा द्वारा उतारा जा सकता है। टाटा, बीरला, सिंघानियां जैसे उद्योगपतियों ने समाज के हित के लिए अनेक कार्य किया है। चैरिटेबल ट्रस्टों के माध्यम से समाज की भलाई का कार्य किया है।